छोटा जादूगर

जयशंकर प्रसाद

कार्निवल के मैदान में बिजली जगमगा रही थी । हँसी और विनोद का कलनाद गूँज रहा था । मैं खड़ा था उस छोटे फूहारे के पास, जहाँ एक लड़का चुपचाप शरबत पीने वालों को देख रहा था । उसके गले में फटे कुरते के ऊपर से एक मोटी-सी सूत की रस्सी पड़ी थी और जेब में कुछ ताश के पत्ते थे । उसके मुँह पर गम्भीर विषाद के साथ धैर्य की रेखा थी । मैं उसकी ओर न जाने क्यों आकर्षित हुआ । उसके अभाव में भी सम्पूर्णता थी । मैंने पूछा- ''क्यों जी तुमने इसमें क्या देखा ।''

''मैने सब देखा है । यहाँ चूड़ी फेंकते है । खिलौनों पर निशाना लगाते हैं । तीर से नम्बर छेदते हैं । मुझे तो खिलौनों पर निशाना लगाना अच्छा मालूम हुआ। जादूगर तो बिलकुल निकम्मा है । उनसे अच्छा तो ताश का खेल मैं ही दिखा सकता हूँ ।'' - उसने बड़ी प्रगल्भता से कहा ।

उसकी वाणी में कहीं रुकावट न थी।

मैंने पूछा- ''और उस परदे में क्या है ? वहाँ तुम गये थे ?''

''नहीं, वहाँ मैं नहीं जा सका । टिकट लगता है ।''

मैंने कहा - ''तो चलो, मैं वहाँ पर तुमको लिवा चलूँ ।'' मैंने मन-ही मन कहा- 'भाई । आज के तुम्हीं मित्र रहे ।'

उसने कहा- ''वहाँ जाकर क्या कीजियेगा ? चलिए निशाना लगाया जाए ।''

मैंने उससे सहमत होकर कहा- ''तो फिर चलो, पहले शरबत पी लिया जाए।'' उसने स्वीकार -सूचक सिर हिला दिया ।

मनुष्यों की भीड़ से जाड़े की संध्या भी वहाँ गर्म हो रही है । हम दोनों शरबत पीकर निशाना लगाने चले । राह में ही उससे पूछा- ''तुम्हारे और कौन हैं ?''

''माँ और बाबूजी ।''

''उन्होंने तुमको यहाँ आने के लिए मना नहीं किया ?''

''बाबूजी जेल में हैं ।''

''क्यों ?''

''देश के लिए''- वह गर्व से बोला ।

''और तुम्हारी माँ !''

''वह बीमार है ।''

''और तुम तमाशा देख रहे हो !''

उसके मुहँ पर तिरस्कार की हँसी फूट पड़ी । उसने कहा, ''तमाशा देखने नहीं, दिखाने निकला हूँ । कुछ पैसे ले जाऊँगा, तो माँ को पथ्य दूँगा । मुझे शरबत न पिलाकर आपने मेरा खेल देखकर मुझे कुछ दे दिया होता, मुझे अधिक प्रसन्नता होती !''

मैं आश्चर्य से उस तेरह-चौदह वर्ष कि लड़के को देखने लगा ।

''हाँ मैं सच कहता हूँ, बाबू जी ! माँजी बीमार हैं; इसलिए मैं नहीं गया ।''

''कहाँ ?''

''जेल में ! जब कुछ लोग खेल-तमाशा देखते ही हैं, तो मैं क्यों न दिखाकर माँ की दवा करूँ और अपना पेट भरूँ ।''

मैंने दीर्घ निश्वास लिया । चारों ओर बिजली के लट्टू नाच रहे थे । मन व्यग्र हो उठा । मैंने उससे कहा- ''अच्छा, चलो निशाना लगाया जाए ।''

हम दोनों उस जगह पर पहुँचे, जहाँ खिलौने को गेंद से गिराया जाता था । मैंने बारह टिकट खरीदकर उस लड़के को दिये ।

वह निकला पक्का निशानेबाज । उसका कोई गेंद खाली नहीं गया । देखने वाले दंग रह गये । उसने बारह खिलौनों को बटोर लिया लेकिन उठाता कैसे ? कुछ मेरे रूमाल में बँधे, कुछ जेब में रख लिये गये ।

लड़के ने कहा- ''बाबूजी, आपको तमाशा दिखाऊँगा । बाहर आइए । मैं चलता हूँ ।'' वह नौ-दो ग्यारह हो गया । मैंने मन-ही-मन कहा- ''इतनी जल्दी आँख बदल गयी ।''

मैं घूमकर पान की दुकान पर आ गया । पान खाकर बड़ी देर तक इधर-उधर टहलता देखता रहा । झूले के पास लोगों का ऊपर-नीचे आना देखने लगा । अकस्मात् किसी ने ऊपर के हिंडोले से पुकारा- ''बाबूजी !''

मैंने पूछा- ''कौन ?''

''मैं हूँ छोटा जादूगर ।''

X X X X

कलकता के सुरम्य बोटानिकल-उद्यान में लाल कमलिनी से भरी हुई एक छोटी सी झील के किनारे घने वृक्षों की छाया में अपनी मंडली के साथ बैठा हुआ मैं जलपान कर रहा था । बात हो रही थी । इतने में वही छोटा जादूगर दिखाई पड़ा । हाथ में चारखाने की खादी का झोला, साफ जाँघिया और आधी बाहों का कुरता ।

सिर पर मेरा रूमाल सूत की रस्सी से बंधा हुआ था । मस्तानी चाल से झूमता हुआ आकर कहने लगा-

''बाबूजी नमस्ते ! आज कहिए तो खेल दिखाऊँ ।''

''नहीं जी, अभी हम लोग जलपान कर रहे हैं ।''

''फिर इसके बाद क्या गाना-बजाना होगा, बाबूजी ?''

''नहीं जी- तुमको'' क्रोध से कुछ और कहने जा रहा था । श्रीमती ने कहा- ''दिखलाओ जी, तुम तो अच्छे आये । भला कुछ मन तो बहले ।'' मैं चुप हो गया; क्योंकि श्रीमती की वाणी में वह माँ की-सी मिठास थी, जिसके सामने किसी भी लड़के को रोका नहीं जा सकता । उसने खेल आरम्भ किया ।

उस दिन कार्निवल के सब खिलौने उसके खेल में अपना अभिनय करने लगे । भालू मनाने लगा । बिल्ली रूठने लगी । बन्दर घुड़कने लगा ।

गुड़िया का ब्याह हुआ । गुड्डा वर काना निकला । लड़के की वाचालता से ही अभिनय हो रहा था । सब हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये ।

मैं सोच रहा था । बालक को आवश्यकता ने कितना शीघ्र चतुर बना दिया । यही तो संसार है ।

ताश के सब पत्ते लाल हो गये । फिर सब काले हो गये । गले की सूत की डोरी टुकड़े होकर जुड़ गई । लट्टू अपने से नाच रहे थे । मैंने कहा- ''अब हो चुका । अपना खेल बटोर लो, हमलोग भी अब जायेंगे ।''

श्रीमती जी ने धीरे से उसे एक रुपया दे दिया । वह उछल उठा ।

मैंने कहा- ''लड़के !''

''छोटा जादूगर कहिए। यही मेरा नाम है। इसी से मेरी जीविका है।''

मैं कुछ बोलना ही चाहता था कि श्रीमती ने कहा- ''अच्छा, तुम इस रुपये से क्या करोगे ?''

''पहले भरपेट पकौड़ी खाऊँगा। फिर एक सूती कम्बल लूँगा।''

मेरा क्रोध अब लौट आया। मैं अपने पर बहुत क्रुद्ध होकर सोचने लगा- 'ओह ! कितना स्वार्थी हूँ मैं। उसके एक रुपये पाने पर मैं ईर्ष्या करने लगा था न।'

वह नमस्कार करके चला गया। हम लोग लता-कुञ्ज देखने के लिए चले।

उस छोटे से बनावटी जंगल में संध्या साँय साँय करने लगी थी। अस्ताचलगामी सूर्य की अन्तिम किरण वृक्षों की पत्तियों से विदाई ले रही थी। एक शांत वातावरण था। हम लागे धीरे-धीरे मोटर से हावड़ा की ओर आ रहे थे।

रह-रहकर छोटा जादूगर स्मरण होता था। सचमुच वह एक झोपड़ी के पास कम्बल कन्धे पर डाले खड़ा था। मैंने मोटर रोककर उससे पूछा- ''तुम यहाँ कहाँ ?''

''मेरी माँ यहाँ है न। अब उसे अस्पताल वालों ने निकाल दिया है।'' मैं उतर गया। उस झोपड़ी में देखा, तो एक स्त्री चिथड़ों से लदी हुई काँप रही थी।''

छोटे जादूगर ने कम्बल ऊपर से डाल कर उसके शरीर से चिमटते हुए कहा- ''माँ।''

मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े।

X X X X

बड़े दिन की छुट्टी की बात चली थी । मुझे अपने ऑफिस में समय से पहुँचना था । कलकता से मन ऊब गया था । फिर भी चलते-चलते एक बार उस उद्यान को देखने की इच्छा हुई । साथ-ही -साथ जादूगर भी दिखाई पड़ जाता तो, और भी मैं उस दिन अकेले ही चल पड़ा । जल्द लौट आना था ।

दस बज चुका था । मैंने देखा कि उस निर्मल धूप में सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का रंगमंच सजा था । मोटर रोक कर उतर पड़ा । वहाँ बिल्ली रूठ रही थी । भालू मनाने चला था । ब्याह की तैयारी थी; यह सब होते हुए भी जादूगर की वाणी में वह प्रसन्नता की तरी नहीं थी । जब वह औरों को हँसाने की चेष्टा कर रहा था, तब जैसे स्वयं काँप जाता था । मानो उसके रोएँ रो रहे थे । मैं आश्चर्य से देख रहा था । खेल हो जाने पर पैसा बटोर कर उसने भीड़ में मुझे देखा । वह जैसे क्षण भर के लिए स्फूर्तिमान हो गया । मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा- ''आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नहीं ?''

''माँ ने कहा है कि आज तुरन्त चले आना । मेरी घड़ी समीप है ।'' - अविचल भाव से उसने कहा ।

''तब भी तुम खेल दिखाने चले आये ।'' मैंने कुछ क्रोध से कहा । मनुष्य के सुख दु:ख का माप अपना ही साधन तो है । उसी के अनुपात से वह तुलना करता है ।

उसके मुँह पर वही परिचित तिरस्कार की रेखा फूट पड़ी ।

उसने कहा- ''क्यों न आता !''

और कुछ अधिक कहने में जैसे वह अपमान का अनुभव कर रहा था ।

क्षण-भर में मुझे अपनी भूल मालूम हो गई । उसके झोले को गाड़ी में फेंक कर उसे भी बैठाते हुए मैंने कहा- ''जल्दी चलो ।'' मोटरवाला मेरे बताए पथ पर चल पड़ा ।

कुछ ही मिनटों में मैं झोपड़ी के पास पहुँचा । जादूगर दौड़कर झोपड़ी में माँ-माँ पुकारते हुए घुसा । मैं भी पीछे था; किन्तु स्त्री के मुँह से, 'बे.....' निकलकर रह गया । उसके दुर्बल हाथ उठकर गिर गये । जादूगर उससे लिपटा रो रहा था, मैं स्तब्ध था । उस उज्ज्वल धूप में समग्र संसार जैसे जादू सा मेरे चारों ओर नृत्य करने लगा ।

शब्दार्थ :

जगगमा रही थी - खूब चमक रही थी;

विनोद - मन बहलाने वाली बात, परिहास;

विषाद - दुःख;

निशाना - लक्ष;

प्रगल्भता - चतुर, प्रतिभाशाली;

रुकावट - अड़चन, बाधा;

वाणी - वचन;

तमाशा - वह खेल या कार्य जिसे देखने मे मन प्रसन्न हो;

लट्टू - एक प्रकार का गोल खिलौना, जिसे जमीन पर फेंक कर नचाया जाता है;

निशानेबाज - किसी को लक्ष्य बना कर उस पर वार करने वाला;

हिंडोले - पालने, झूले;

बोटानिकल - वनस्पति विभागीय;

मस्तानी - मतवाली;

झूमना - बारबार आगे पीछे, या नीचे ऊपर हिलना;

बटोर - समेट, इकट्ठा या जमा करना;

बनावटी - नकली, कृत्रिमता;

चिथड़े - फटे हुए कपड़े;

अविचल - अचल, जो अपने ध्यान से हटे नहीं;

अनुशीलनी

१. समझो और लिखो :

(i) लेखक ने छोटे जादूगर को कहाँ देखा और किस रूप में देखा ?

(ii) छोटे जादूगर ने लेखक को प्रगल्भता में क्या-क्या बताया ?

(iii) लेखक ने छोटे जादूगर को पाकर मन ही मन क्या कहा ?

(iv) लेखक और जादूगर दोनों शरबत पीने के बाद क्या करने चले गए ?

(v) लेखक ने जादूगर से ''तमाशा देख रहे हो'' पूछने पर उसने क्या उत्तर दिया ?

भाषाबोध : -

२. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ याद करो :

नौ-दो -ग्यारह होना = भाग जाना

नाम कमाना = प्रसिद्धि प्राप्त करना

नाम उछालना = बदनाम करना

नाक कटाना = बेइज्जती करना

३. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखो :

(i) उसके दुर्बल हाथ उठकर गिर गया ।

(ii) मेरा घड़ी समीप है ।

(iii) मैं आश्चर्य से देख रहे थे ।

(iv) हम लोग जलपान कर रहा है ।

(v) हम दोनों शरबत पीकर निशाना लगाने चला ।

४. निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन रूप लिखो :

खिलौना - खिलौने	रुपया -
छोटा -	मेरा -
बोला -	आया-
बँधा -	हुआ -
अच्छा -	

❖ ❖ ❖